लाइबनित्ज (Leibniz)

* जर्मन दार्शनिक
* बहुतत्ववादी दार्शनिक
* जिसे अन्य दर्शनों में द्रव्य कहा गया है उसे यहाँ "मोनड" की संज्ञा देते हैं।
* मोनड जीवन और जगत के मूल तत्व हैं, मोनड अनेक हैं एवं चेतन हैं।

  अनेक ↓ बहुतत्ववाद , चेतन ↓ अध्यात्मवाद

* लाइबनित्ज का दर्शन बहुतत्ववादी अध्यात्मवाद कहलाता है।
  (चार्वाक का दर्शन बहुतत्ववादी भौतिकवाद) ...

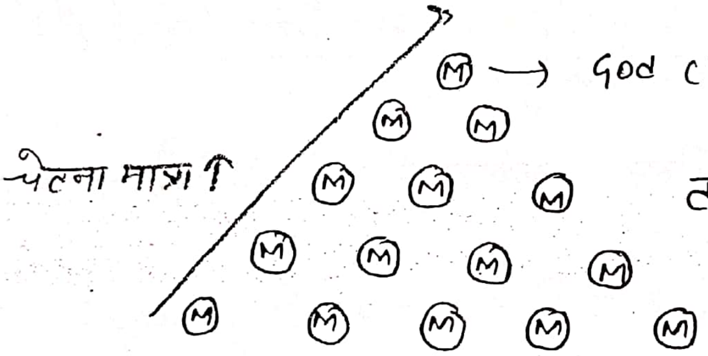

M → God (मोनडों का मोनड) → पूर्ण चेतना।

Monad → चेतन, अनेक

तारतम्यता
↓
आधार-चेतना की मात्रा।

कोई पूर्णतः भौतिक द्रव्य नहीं है।

मन - शरीर → गुणात्मक समानता एवं मात्रात्मक भिन्नता। उल्लेखनीय है कि डेकार्ट और स्पिनोजा के दर्शन में मन और शरीर में गुणात्मक भिन्नता मानी गयी है।

डेकार्ट	स्पिनोजा	लाइबनित्ज
मन और शरीर में द्रव्यात्मक भिन्नता एवं गुणात्मक भिन्नता	द्रव्यात्मक भिन्नता नहीं केवल गुणात्मक भिन्नता	परस्पर स्वतंत्र मोनड है परंतु गुणात्मक समानता है। केवल मात्रा में भिन्नता।

चिदणुवाद (Monadology) - चिदणुवाद वह तत्वमीमांसीय सिद्धांत है जिसके अनुसार विश्व का मूल तत्व चिद अणु है। (चेतन Monad) यह अनेक है इस रूप में यहाँ बहुतत्ववादी अध्यात्मवाद का समर्थन करते हैं।

Scanned with CamScanner

द्रव्य विचार (Monadology) (चिदणुवाद)

चिदणुवाद — चित + अणु

Monadlogy :

भूमिका - जर्मन बुद्धिवादी दार्शनिक।

MO. → जगत की एकता और विविधता की व्याख्या द्रव्य के आधार पर करने का प्रयास।

द्रव्य - * लाइबनित्ज अपने द्रव्य को Monad (चिदणु या चेतनाओं) कहते हैं

* मोनड स्वतंत्र, क्रिया शक्ति संपन्न, चेतन पदार्थ हैं।
(Independent active force)

* ये मोनड अनेक, चेतन, अविनाशी एवं अविभाज्य मूलतत्व हैं।

भिन्नता - * विज्ञान - मूल तत्व भौतिक (क्वार्क/quarty)
- क्रिया शक्ति संपन्न क्वार्क

* गणित - गणितीय इकाई अमूर्त एवं निष्क्रीय होती हैं।

* लाइबनिज के दर्शन में मोनड चेतन, सक्रिय एवं शक्ति संपन्न हैं।

तुलना - डेकार्ट - द्वैतवाद - दो प्रकार के मूल तत्व माने गये।
स्पिनोजा - एकतत्ववाद - ईश्वर ही एक मात्र द्रव्य।

लाइबनित्ज - अनेकतत्ववाद - अनेक मोनडो को मूल तत्व रूप माना।

मोनड के गुण - ① सरल → निरवयव → अविभाज्य → अविनाशी → नित्य

② मोनड गतिशील है क्योंकि वे स्वतंत्र क्रिया शक्ति संपन्न चेतन पदार्थ हैं।

③ प्रत्येक मोनड विशिष्ट है कोई भी दो मोनड पूर्णतः एकसमान नहीं हैं उनमें मात्रात्मक भिन्नता है।

Scanned with CamScanner

(5) सभी मोनड समजातीय है (Homogenious) अर्थात् चेतना के दृष्टिकोण से सभी मोनड समान है क्योंकि सभी मोनड चेतन हैं (गुणात्मक समानता मात्रात्मक भिन्नता)

(6) मोनड मूल तत्व है एवं अविभाज्य है। ये मोनड भौतिक नहीं माने जा सकते। क्योंकि यदि मोनडो को भौतिक माना गया तो फिर उनमें विस्तार मानना पड़ेगा। विस्तार मानने पर उन्हें विभाज्य मानना पड़ेगा। अतः यदि मूल तत्व ~~भौतिक~~ अविभाज्य है तो फिर वह उसे भौतिक न मानकर चेतन ही मानना होगा। उल्लेखनीय है कि लाइबनित्ज के मोनड चेतन एवं विस्तार रहित हैं।

विज्ञान → मूल तत्व
↓
परमाणु - भौतिक → विस्तार → अविभाज्य
↓
Qwaks.

दो समान लक्षण –

प्रत्येक मोनड में दो समान लक्षण पाये जाते हैं:-

1) प्रत्यक्ष (Perception)

2) प्रयसन (Appettion)

प्रत्यक्ष- यह मोनड की आंतरिक शक्ति है जिसके द्वारा वह प्रत्येक मोनड अन्य मोनड की दशाओं को अपने भीतर प्रतिबिम्बित करता है। इस रूप में प्रत्येक मोनड एक जीवित दर्पण के समान है। जिस मोनड में चेतना की मात्रा अधिक होती है उसमें ज्ञान की स्पष्टता अधिक होती है और जिसमें चेतना की मात्रा कम होती है उसका ज्ञान भी अस्पष्ट एवं धूमिल होता है।

लाइबनित्ज इसी आंतरिक शक्ति अर्थात् प्रत्यक्ष के आधार पर ज्ञान प्राप्ति की व्याख्या करते हैं।

Q. यदि सभी मोनड गवाक्षहीन है (Windowless) तो फिर लाइबनित्ज ज्ञान की व्याख्या कैसे करते हैं?

Scanned with CamScanner

प्रत्येक मोनाड अन्य मोनाड की दशाओं को प्रतिबिम्बित करता है इस रूप में एक मोनाड को अन्य मोनाड का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

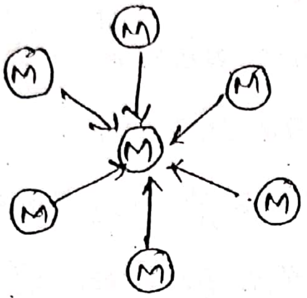

मोनाड - स्वनिर्भर, स्वतंत्र

गवाक्षहीन (windowless)

↓

कोई वास्तविक आदान प्रदान नहीं होता।

जिसमें चेतना मात्रा अधिक

↓

उसमें प्रतिबिम्बन स्पष्ट

जिसमें चेतना मात्रा कम

↓

उसका ज्ञान धूमिल।

प्रयसन - प्रयसन शक्ति के द्वारा प्रत्येक मोनाड अपने आत्मनीहित लक्ष्य की प्राप्ति की ओर सदैव अग्रसरित होता रहता है।

* भौतिक पदार्थ एवं विस्तार की व्याख्या कैसे ?-

यहाँ प्रश्न है कि यदि मोनाड ही मूल तत्व है और सम्पूर्ण विश्व इन्हीं अविस्तारित चेतन मोनडो से निर्मित है तो फिर जगत मे जड़ पदार्थ एवं विस्तार का अनुभव कैसे होता है। लाइबनित्ज इसकी व्याख्या मूल जगत एवं गौण के आधार पर करते है। इनके अनुसार निम्न कोटी के मोनडो में विस्तार एवं सग्रहण की शक्ति होती है। जिसके कारण हमें जड़ द्रव्य एवं विस्तार का अनुभव होता है। वास्तव मे जगत में विशुद्ध जड़ द्रव्य या विस्तार की सत्ता नहीं है। (P.no.60 मध्य भाग देखे)

मोनाड अनेक है परंतु उनमें तारतम्यता है!-

लाइबनित्ज के अनुसार अनेक मोनडो एक मे पिरामिडीय व्यवस्था है। उनमें एकसोपान क्रम है तारतम्यता है, वह चेतना की मात्रा के आधार पर व्यवस्थित है। जिसमें चेतना की मात्रा कम है वह निचले स्तर पर है जिनमें चेतना की मात्रा अधिक है

Scanned with CamScanner

यह अमार के स्तर पर है। इसे हम एक चित्र के द्वारा देख सकते हैं।

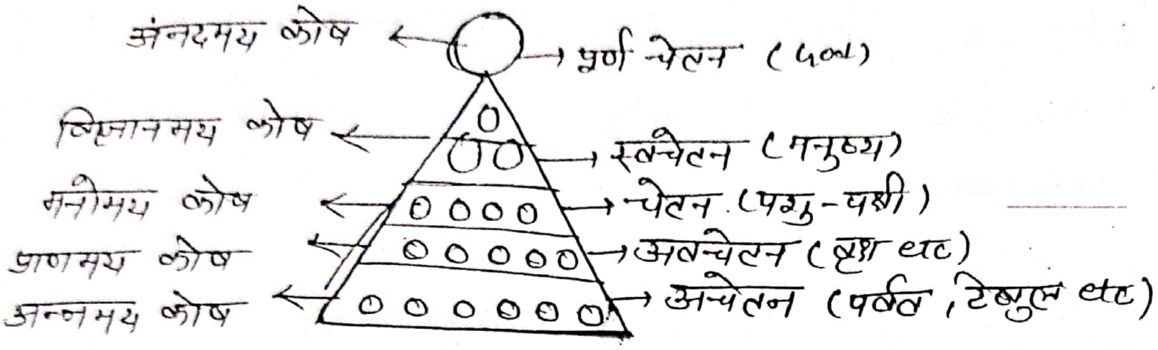

- लाइबनित्ज की यह अवधारणा उपनिषदों के पंच कोषों के समरूप है।
- यहाँ अचेतन का आशय चेतना विहीनता से न होकर चेतना की अल्प मात्रा से है।

मोनड आत्मनिर्भर है -

- मोनड गवाक्षहीन है, आशय है कि किन्ही भी दो मोनडो में कोई वास्तविक अदान प्रदान नहीं होता यह स्वतंत्र है।

समस्या -

- मन - शरीर सबंध की व्याख्या कैसे?
- विभिन्न मोनडो के मध्य परस्पर सबंध और व्यवस्था की व्याख्या कैसे?

समाधान → नियम

पूर्व स्थापित सामंजस्य का नियम (Pre established harmony)
इस नियम के अनुसार ईश्वर ने मोनडो की रचना करते समय ही उनमें एक ऐसी व्यवस्था उत्पन्न कर दी है कि किसी एक में परिवर्तन होने पर दूसरे मोनडो में भी तद्‌नुरूप परिवर्तन होने लगता है।

लाइबनित्ज मतानुसार विभिन्न मोनडो में कोई कारण-कार्य सबंध नहीं है। इनमें कोई क्रिया प्रतिक्रिया भी नहीं होती। विभिन्न मोनडो में होने वाला परिवर्तन, साथ-साथ (सहचारी) ~~होने वाला~~ होता है। मोनड परस्पर क्रिया प्रतिक्रिया नहीं करते।

यह परिवर्तन मोनडो की आंतरिक प्रयासन शक्ति के कारण होता है। परंतु बाहर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि इनमें कोई वास्तविक सम्बन्ध है जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है। प्रत्येक मोनड परस्पर स्वतंत्र है।

<u>उदाहरण के द्वारा स्पष्टीकरण</u>– Printed Notes·

1) दो घड़ियों का उदाहरण

2) ओरकेस्ट्रा का उदाहरण

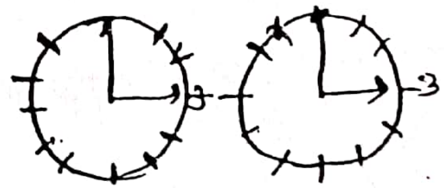

दो घड़ियाँ – घड़ीसाज

सहचारी परिवर्तन

↓

मन - शरीर

एक तान

↑

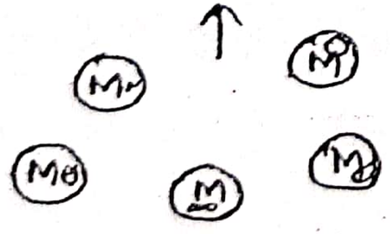

आर्केस्ट्रा

↓

जगत की व्यवस्थित व्याख्या

Descartes द्वैतवाद	Spinoza एकतत्ववाद	बहुतत्ववाद
1) द्रव्य की परिभाषा में स्वतंत्र सत्ता पर बल	1) स्वतंत्र सत्ता पर बल	1) स्वतंत्र क्रिया शक्ति सम्पन्नता पर बल।
2) मन और शरीर परस्पर भिन्न एवं परस्पर स्वतंत्र द्रव्य के रूप में स्थापित।	2) ईश्वर को एकमात्र द्रव्य मानकर मन और शरीर को उसके दो समानांतर गुणों के रूप में स्थापना।	2) मन और शरीर को सजातीय मानते हैं क्योंकि दोनो में चेतना है। शरीर में चेतना की मात्रा कम तथा मन में चेतना मात्रा अधिक।
3) निरपेक्ष रूप में एक द्रव्य (ईश्वर) और सापेक्ष रूप से दो प्रकार के द्रव्य (मन - शरीर) को स्वीकार कर एकता की व्याख्या का प्रयास।	3) एकता को मूल मानकर उसमें विविधता को ढूंढने का प्रयास	3) विविधता को मूल मानकर उसमें एकता स्थापित करने का प्रयास।
4) अन्त: क्रियावाद	4) समानांतरवाद (Parallelism)	5) पूर्व स्थापित सामंजस्य का नियम।
5) द्रव्यात्मक द्वैत एवं गुणात्मक द्वैत दोनो ~~बुद्धिवाद जन्मजात प्रत्ययों को विशेष महत्व~~	5) द्रव्यात्मक अद्वैत (एकतत्ववाद और गुणात्मक द्वैतवाद।	5) गुणात्मक समानता एवं मात्रात्मक भिन्नता

लाइबनित्ज का दर्शन बुद्धिवाद की पराकाष्ठा है।

6) बुद्धिवाद जन्मजात प्रत्ययों को विशेष महत्व देता है परंतु डेकार्ट के दर्शन में कुछ ही प्रत्ययों को जन्मजात माना गया है सम्पूर्ण ज्ञान जन्मजात नहीं है।	6) कुछ प्रत्यय जन्मजात हैं।	6) लाइबनित्ज के अनुसार सभी प्रत्यय जन्मजात है। लाइबनित्ज की यह अवधारणा अनुभववादी लॉक के विपरीत है। ~~इनके अनुसार~~ सभी प्रत्यय जन्मजात हैं।
7) डेकार्ट बुद्धिवादी दार्शनिक हैं परंतु जगत की व्याख्या के क्रम में वे अनुभव की स्थिति को भी स्वीकार करते हैं।	7) स्पिनोजा यद्यपि ईश्वर का ज्ञान अत: प्रज्ञात्मक मानते हैं परंतु पर्यायों के ज्ञान के संदर्भ में वे अनुभव को स्वीकार करते हैं।	7) बुद्धि को छोड़कर बुद्धि में ऐसा कुछ नहीं है जो पहले इंद्रियानुभव में न रहा हो।

Scanned with CamScanner

Decartes	Spinoza	Leibnitz
8) अनुभववाद बुद्धिवाद का विपरीत सिद्धांत है। अनुभव का विषय सामान्यत: लौकिक जगत को माना जाता है जिसे 4? जड़ द्रव्य के रूप मे स्वीकार किया जाता है। प्लेटो के दर्शन मे इस जगत को अर्द्ध सत् एवं अर्द्ध असत् कहा गया है। जबकि डेकार्ट के दर्शन मे जगत को ईश्वर सापेक्ष द्रव्य के रूप मे स्वीकार किया गया है।	8) स्पिनोजा के दर्शन मे अचित अर्थात् & जड़ तत्व को द्रव्य के रूप मे स्वीकार ना करके ईश्वर के गुण के रूप मे स्वीकार किया गया है।	अनुभववादी लॉक - "बुद्धि मे ऐसा कुछ भी नहीं है जो पहले इंद्रियानुभव मे न रहा हो" - Nothing in our intellect which was not previous in our senses - lock. - " , except the intellect itself - Leibnitz 8) लाइबनित्ज के अनुसार बुद्धि ही ज्ञानप्राप्ति का साधन है (प्लेटो)। इंद्रिया अनुभव से हमें ज्ञान नहीं मिलता बल्कि इससे जन्मजात प्रत्ययों को अभिव्यक्त होने का अवसर प्राप्त होता है। (कोई भी ज्ञान बाहर अर्जित x) •लाइबनित्ज के अनुसार मोनड गवाक्षहीन है और विभिन्न मोनडो के मध्य कोई वास्तविक आदान प्रदान नहीं होता। अत: कोई भी ज्ञान बाहर से अर्जित ज्ञान नहीं है। अनुभव केवल ऐसा अवसर उत्पन्न करता है जिससे ज्ञान स्पष्ट हो जाता है। •लाइबनित्ज के अनुसार जिसे हम जड़तत्व कहते हैं वह विशुद्ध जड़तत्व नहीं है। ⇒ विश्व का मूल तत्व चेतन अणु है अत: प्रत्येक द्रव्य मे चेतन विद्यमान है।

1999 (UPPCS)

इस रूप मे लाइबनित्ज का दर्शन बुद्धिवाद की परकाष्ठा है।

जगत की दो प्रकार की व्याख्याए

Mechanical Explanation
यांत्रिक व्याख्या

1) विज्ञान समर्थित

2) जगत की उत्पत्ति किसी उद्देश्य की प्राप्ति या प्रयोजन की सिद्धी के लिये नहीं हुई हैं।

3) सामान्यतः यह मानता है कि जगत विकास का परिणाम है।

4) जगत मे विद्यमान व्यवस्था, सामंजस्य एवं क्रमिकता विकास का परिणाम है।

जैसे - Big bang theory जगत की उत्पत्ती की यांत्रिक व्याख्या करता है

जैसे - चार्वाक दर्शन में जगत की यांत्रिक व्याख्या है।

कब लाइबनित्ज के दर्शन में यंत्रवाद का समर्थन - मोनडो का रचियता ईश्वर है और सभी मोनड पूर्व स्थापित सामंजस्य के नियम से संचालित हैं।

प्रत्येक मोनड।

Teleological Explation.
प्रयोजनवादी / उद्देश्यपरक व्याख्या

1) धर्म समर्थित

2) जगत की उत्पत्ति प्रयोजन सिद्धी के लिये है।

3) जगत रचना है ईश्वर की, यह रचना का परिणाम है।

4) जगत में विद्यमान व्यवस्था सामंजस्य एवं अनुक्रम का कारण ईश्वर है।

लाइबनित्ज दर्शन मे प्रयोजनवाद

- प्रत्येक मोनड में प्रयासन शक्ति होती है और प्रयासिन शक्ति के कारण प्रत्येक मोनड अपने आत्मनीहित उद्देश्य की प्राप्ति की ओर सदैव गतिशील होता है।
- विश्व की रचना ईश्वर के द्वारा। इस विश्व में विद्यमान व्यवस्था एवं सामंजस्य का कारण ईश्वर है।

Scanned with CamScanner

क्या ईश्वर चिद्णु परस्पर स्वतंत्र है? – अनेक चिद्णु परस्पर स्वतंत्र हैं परंतु वे अव्यवस्थित नहीं हैं। उनमें एक तारतम्यता है जो चेतना की मात्रा के आधार पर निर्धारित है। परंतु चिद्णु परम चिद्णु ईश्वर द्वारा रचित या संचालित पूर्व स्थापित सामंजस्य के नियम से निर्देशित हैं। इस रूप में विभिन्न चिद्णुओं को ईश्वर से पूर्णतः स्वतंत्र नहीं माना जा सकता।

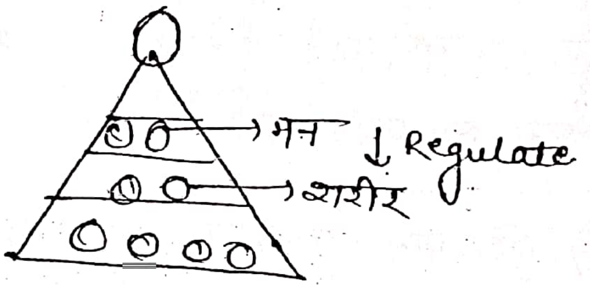

Mind-body –

Decartes – द्रव्यात्मक अंतर एवं गुणात्मक अंतर दोनों

Spinoza – द्रव्यात्मक अंतर नहीं गुणात्मक अंतर

Liebnitz – गुणात्मक अंतर नहीं केवल मात्रात्मक अंतर (द्रव्यात्मक अंतर) इसी मात्रात्मक अंतर के आधार पर अनेक द्रव्यों की सत्ता लाइबनित्ज स्वीकार किये हैं।

Scanned with CamScanner